



Karamate Usmane Ghani (Gujarati)

કરમાતો

کرامت عثمانی
گانی

ઉસ્માનો ગાની

(મઅ દીગર હિકાયાત)



મગારે સસ્થિદુના ઉસ્માને ગાની (જલ્લતુલ બકીઅ, મદીનતુલ મુનવ્વરહ)

શીમે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, જાનિરે ઘ'ખે વરલામી, હાગરે અલ્લામ મીલાના અબૂ ઢિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ૨-૪વી

کاتبہ تبرکاتہم
العسائیہ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अज: शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, हजरत अद्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्य़ास अत्तार कादिरि २-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ
दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ लीजिये إِنَّ فَدَاءَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा: ऐ अद्लाह! हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ-जमत और बुजुर्गी वाले. (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)
नोट: अव्वल आबिर ओक ओक बार दुइइ शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना
व भकीअ
व मक्किरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

करामाते उस्माने गनी

येह रिसाला (करामाते उस्माने गनी)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी हजरत अद्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्य़ास अत्तार कादिरि २-जवी ज़ियाई दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल भत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाओअ करवाया है. ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाओं तो मजलिसे तराजिम को (ब जरीअअे मक्तूब, ई-मैल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाईये.

राबिता: मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात, ईन्डिया

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કરામાતે ઉસ્માને ગની¹ (મયા દીગર હિકાયાત)

શૈતાન લાખ સુસ્તી દિલાએ યેહ રિસાલા (31 સફહાત) મુકમ્મલ
પઠ લીજિયે إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ આપ કા દિલ અ-ઝ-મતે સહાબા
સે લબરેઝ હો જાએગા.

દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત

સરકારે મદીનએ મુનવ્વરહ, સરદારે મકકએ મુકર્રમા
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને બ-ર-કત નિશાન હૈ : “ઐ લોગો !
બેશક બરોઝે કિયામત ઉસ કી દહ્શતોં (યા’ની ઘબરાહટોં) ઔર હિસાબ કિતાબ
સે જલ્દ નજાત પાને વાલા શખ્સ વોહ હોગા જિસ ને તુમ મેં સે મુઝ પર દુન્યા કે
અન્દર બ કસરત દુરુદ શરીફ પઢે હોંગે.”

(ألفردوس بمأثور الخطاب ج ٥ ص ٢٧٧ حديث ٨١٧٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1 : યેહ બયાન અમીરે અહલે સુન્નત صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી
આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક દા’વતે ઈસ્લામી કે આલમી મ-દની મકકઝ ફૈઝાને
મદીના (બાબુલ મદીના) કરાચી મેં હોને વાલે (20 જુલ હિજજતિલ હરામ 1429 સિ.હિ.
2008 ઈ. કે) સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ મેં ફરમાયા જો તરમીમ વ ઈઝાફે કે સાથ તબ્અ
કિયા ગયા.
-મજલિસે મક-ત-બતુલ મદીના

करमाने मुस्तकं عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ سَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुरुदे पाक पढा अद्लाह उस पर दस रकमतें बेजता है. (स्म)

पुर असरार मा'जूर

हजरते सय्यिदुना अबू किलाबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है के मैं ने मुल्के शाम की सर जमीन में ओक आदमी देखा जो बार बार येह सदा लगा रहा था : “हाअे अइसोस ! मेरे लिये जहन्नम है.” मैं उठ कर उस के पास गया तो येह देष कर हैरान रह गया के उस के दोनों² हाथ पाँउ कटे हुअे हैं, दोनों² आंभों से अन्धा है और मुंह के बल जमीन पर औंधा पडा हुवा बार बार येही कहे जा रहा है : “हाअे अइसोस ! मेरे लिये जहन्नम है.” मैं ने उस से पूछा : औ आदमी ! क्यूं और किस बिना पर तू येह कह रहा है ? येह सुन कर उस ने कहा : औ शप्स ! मेरा हाल न पूछ, मैं उन बदनसीबों में से हूँ जो अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को शहीद करने के लिये आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मकान में दामिल हो गअे थे, मैं जब तलवार ले कर करीब पड़ोया तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की जौजअे मोह-त-रमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا मुजे जोर जोर से डांटने लगीं तो मैं ने गुस्से में आ कर बीबी साहिबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को थप्पड मार दिया ! येह देष कर अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उस्माने गनी रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह हुआ मांगी : “अद्लाह तआला तेरे दोनों² हाथ और दोनों² पाँउ काटे, तुजे अन्धा करे और तुज को जहन्नम में जोंक दे.” औ शप्स ! अमीरुल मुअमिनीन रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का पुर जलाल येहरा देष कर और उन की येह काहिराना हुआ सुन कर मेरे बदन का ओक ओक रंगटा षडा हो गया और मैं षौइ से कांपता हुवा वहां से भाग षडा हुवा. मैं अमीरुल मुअमिनीन रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की यार हुआओं

કરમાને મુસ્તકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્ત મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખરૂન)

મેં સે તીન કી ઝદ મેં તો આ ચુકા હૂં, તુમ દેખ હી રહે હો કે મેરે દોનો² હાથ
 ઓર દોનો² પાઉ કટ ચુકે ઓર આંખેં ભી અન્હી હો ચુકીં, આહ ! અબ
 સિફ ચૌથી દુઆ યા'ની મેરા જહન્નમ મેં દાખિલ હોના બાકી રહ ગયા હૈ.

(الزِّيَاضُ النَّصْرَةَ لِلنَّجَبِ الطَّبْرِيِّ ج 3 ص 41)

દો જહાં મેં દુશ્મને ઉસ્માં, ઝલીલો પ્વાર હે
 બા'દ મરને કે અઝાબે નાર કા હકદાર હે

કુન્યત વ અલ્લાબ

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! 18 ઝુલ હિજજતિલ હરામ

35 સિને હિજરી કો અલ્લાહુ ગની عَزَّ وَجَلَّ કે પ્યારે નબી, મક્કી મ-દની
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે જલીલુલ કદ્ર સહાબી ઉસ્માને ગની. رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
 નિહાયત મઝલૂમિયત કે સાથ શહીદ ક્રિયે ગએ. આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
 ખુ-લફાએ રાશિદીન (યા'ની હઝરતે સય્યિદુના અબૂ બક સિદીક, હઝરતે
 સય્યિદુના ઉમર ફારૂક, હઝરતે સય્યિદુના ઉસ્માને ગની, હઝરતે સય્યિદુના
 અલિય્યુલ મુર્તઝા عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ) મેં તીસરે ખલીફા હે. આપ
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કી કુન્યત “અબૂ અમ્ર” ઓર લકબ જામિઉલ કુરઆન હૈ
 નીઝ એક લકબ “ઝુન્નૂરૈન” (દો નૂર વાલે) ભી હૈ, ક્યૂંકે અલ્લાહુ ગફૂર
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે નૂર, શાફેએ યૌમુન્નુશૂર, શાહે ગયૂર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને
 અપની દો શહઝાદિયાં યકે બા'દ દીગરે હઝરતે સય્યિદુના ઉસ્માને ગની
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે નિકાહ મેં દી થીં.

નૂર કી સરકાર સે પાયા દોશાલા નૂર કા

હો મુબારક તુમ કો ઝુન્નૂરૈન જોડા નૂર કા

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तउक़ीक़ वोह बढ अप्त हो गया. (अहमद)

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आगाजे ईस्लाम ही में कबूले ईस्लाम कर लिया था, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को “साहिबुल ख़िज-रतैन” (या’नी दो ख़िजरतों वाले) कहा जाता है क्यूंके आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पहले उबशा और फिर मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की तरफ़ ख़िजरत इरमाई.

दो बार जन्नत परीदी

अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शाने वाला बहुत बुलन्दो बाला है, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी मुबारक जिन्दगी में नबिय्ये रहमत, शकीअे उम्मत, माखिके जन्नत, ताजदारे नुबुव्वत, शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से दो मर्तबा जन्नत परीदी, अेक मर्तबा “बीरे इमा” यइदी से परीद कर मुसल्मानों के पानी पीने के लिये वक़्फ़ कर के और दूसरी बार “जैशे उसरत” के मौकअ पर. युनान्ये “सु-नने तिरभिजी” में है : उजरते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन अब्बाब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के में बारगाहे न-बवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में हाजिर था और हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोहतरम, रहमते आलम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुहत्तशम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को “जैशे उसरत” (या’नी गज्वअे तबूक) की तय्यारी के लिये तरगीब ईशाद इरमा रहे थे. उजरते सय्यिदुना उस्मान बिन अइज़ान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उठ कर अर्ज़ की : يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! पालान और दीगर मु-तअद्लिका सामान समेत सो¹⁰⁰ ठिंट मेरे जिम्मे हैं. हुजुर सरापा नूर, इैज गज्वूर, शाहे गयूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फिर तरगीबन इरमाया. तो उजरते

करामाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुइदु पाक पढा (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी.) (अरवाह)

सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ दोगारा षडे हुअे और अर्ज की :
 या रसूलद्लाह صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं तमाम सामान समेत दो सो²⁰⁰
 गिंट छाजिर करने की जिम्मादारी लेता हूँ. दो² जहां के सुल्तान, सरवरे
 ज़ीशान, महबूबे रहमान صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबअे किराम
 عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फिर तरगीबन एशाद इरमाया तो उजरते सय्यिदुना उस्माने
 गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की : या रसूलद्लाह صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ !
 मैं मअ सामान तीन सो³⁰⁰ गिंट अपने जिम्मे कबूल करता हूँ.

रावी इरमाते हें : मैं ने देखा के हुजुरे अन्वर, मदीने के ताजवर,
 शाफ़ेअे महशर, बि एजने रब्बे अकबर गैबों से बा षबर, महबूबे
 दावर صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह सुन कर भिम्भरे मुनव्वर से नीये
 तशरीफ़ ला कर दो मर्तबा इरमाया : “आज से उस्मान (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ)
 जो कुछ करे उस पर मुवा-अजा (या'नी पूछगछ) नहीँ.”

(ترمذی ج ۵ ص ۳۹۱ حدیث ۳۷۲۰)

धमामुल अस्बिया ! कर दो अता जजबा सप्पावत का !

निकल जाअे उमारे हिल से हुब्बे दौलते इनी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

950 गिंट और 50 घोडे

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! आज कल देखा गया है कुछ
 उजरात दूसरों की देखा देखी जजबात में आ कर यन्हा लिखवा तो देते
 हें मगर जब देने की बारी आती है तो उन पर भारी पड जाता है उता
 के बा'ज तो देते भी नहीं ! मगर कुरबान ज़ाईये महबूबे मुस्तफ़ा,
 सय्यिदुल अस्बिया, उस्माने बा हया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के जूदो सप्पा पर, के

करमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढा उस ने जफा की. (मैराज़ान)

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने ओ'लान से बहुत ज़ियादा यन्दा पेश किया युनान्ये मुफ़्स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत, हजरते मुफ़्ती अहमद यार पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : अयाल रहे के येह तो उन का ओ'लान था मगर हाज़िर करने के वक्त आप (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने 950 गिंट, 50 घोडे और 1000 अशरफ़ियां पेश कीं, फिर बा'द में 10 हज़ार अशरफ़ियां और पेश कीं. (मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं) अयाल रहे के आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पहली बार में 100 का ओ'लान किया, दूसरी बार 100 गिंट के धलावा और 200 का, तीसरी बार और 300 का, कुल 600 गिंट (पेश करने) का ओ'लान फ़रमाया.

(मिरआतुल मनाज्जिद, ज़ि. 8, स. 395)

मुझे गर मिल गया बहुरे सभा का अेक भी कतरा

मेरे आगे जमाने तर की होगी डेय सुल्तानी

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

उमूरे पैर के लिये अतिव्यात ज़मज़ करना सुन्नत है

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! बा'ज नादान दीनी कामों के लिये यन्दा करना बुरा जानते और इस से रोकते हैं, याद रभिये ! बिदा वजह इस कारे पैर से रोकने की शरअन मुमा-न-अत है युनान्ये फ़तावा र-जविख्या जिल्द 23 सफ़हा 127 पर मेरे आका आ'ला हजरत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ अेक सुवाल के जवाब में इशाहद फ़रमाते हैं : उमूरे पैर के लिये मुसल्मानों से इस तरह यन्दा करना बिद्अत नहीं बल्के सुन्नत

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पढेगा में डियामत के दिन उस की शकाअत करेगा. (कोश)

से साबित है जो लोग इस से रोकते हैं (वोह) **مَتَاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَبَرٍ أَتَيْمٍ** (तर-ज-मअे क-जुल ईमान : तलाई से बडा रोकने वाला हद से बढने वाला गुनहगार) में दाखिल होते हैं. हजरते सय्यिदुना जरीर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से है, कुछ (हजरात) बरहना पा, बरहना बदन, सिई अेक कमली कइनी की तरह थीर कर गले में डाले बिदमते अकदसे हुजूरे पुरनूर, सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** में हाजिर हुअे, हुजूरे पुरनूर, रहमते आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उन की मोहताज (या'नी गुरबत) देयी, येहूरअे अन्वर का रंग बदल गया. बिलाल **(رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ)** को अजान का हुकम दिया, आ'दे नमाज फुत्बा इरमाया, आ'दे तिलावते आयाते मुबा-रका ईशाई किया : “कोई शप्स अपनी अशरफी से स-दका करे, कोई रुपै से, कोई कपडे से, कोई अपने कलील (या'नी थोडे) गेहूं से, कोई अपने थोडे छुहारों से, यहां तक इरमाया : अगर्थे आधा छुहारा.” ईस ईशाई गिरामी (या'नी अतिय्यात देने की तरगीब) को सुन कर अेक अन्सारी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** रुपियों का थेला उठा लाअे जिस के उठाने में उन के हाथ थक गअे, इर लोग पै दर पै स-दकात लाने लगे, यहां तक के दो² अम्बार (या'नी 2 देर) जाने और कपडे के डो गअे यहां तक के मैं ने देजा के **رَسُولُ دَلِيلٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का येहूरअे अन्वर फुशी के बाईस कुन्दन (या'नी ढालिस सोने) की तरह दमकने लगा और ईशाई इरमाया : “जो शप्स ईस्लाम में कोई अस्थी राह निकाले उस के लिये उस का सवाब है और उस के आ'द जितने लोग उस राह पर अमल करेंगे सब का सवाब उस (अस्थी राह निकालने वाले) के लिये है बिगैर ईस के, के उन (अमल करने वालों)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : تُمِ جَذَا لَمِي لَحِي مُوَجَّز پَر دُرُودِ پَدُو كِ تُمْبَدَارَا دُرُودِ مُوَجَّز تَكْ پَدُو يَتَلَا لَيْ. (طَرَبِي)

गिजा में मिसाली सा-दगी

उजरते सय्यिदुना शुरह्नील बिन मुस्लिम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के अभीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिदुना उस्माने गनी रज्जि लोर्गों को अभीरों वाला जाना पिलाते और षुद धर ज़ा कर सिर्का और जैतून पर गुजारा करते. (حدیث ۱۰۰ ص ۱۸۶)

कभी सीधा हाथ शर्मगाह को नहीं लगाया

अभीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : जिस हाथ से मैं ने रसूलुद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हस्ते मुबारक पर बैअत की वोह (या'नी सीधा हाथ) इर मैं ने कभी ली अपनी शर्मगाह को नहीं लगाया. (ابن ماجه ج ۱ ص ۹۸ حدیث ۳۱۱)

उजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : “अद्लाह उर्रजल की कसम ! मैं ने न तो जमानअे ज़ाहिलियत में कभी बहकारी की और न ही इस्लाम कबूल करने के बा'द.”

(حلیة الاولیاء ج ۱ ص ۹۹)

बन्द कमरे में भी निराली शर्मो हया

उजरते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने अभीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शर्मो हया की शिदत बयान करते हुअे इरमाया : “अगर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ किसी कमरे में हों और उस का दरवाजा ली बन्द हो तब ली नहाने के लिये कपडे न उतारते और हया की वजह से कमर सीधी न करते थे.”

(حلیة الاولیاء ج ۱ ص ۹۴ حدیث ۱۰۹)

हमेशा रोठे रणा करते

अभीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَكْفًا﴾ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुर्इदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (अं०)

हमेशा नइली रोजे रभते और रात के इन्तिदाई छिस्से में आराम करमा कर बकिय्या रात कियाम (या'नी इबादत) करते थे.

(مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ٢ ص ١٧٣)

भादिम को महमत नहीं देते

आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तवाजोअ (या'नी आजिजी) का येह डाल था के रात को तहजजुद के लिये उठते और कोई बेदार न हुवा डोता तो पुद ही वुजू का सामान कर लेते और किसी को जगा कर उस की नींद में भलल अन्दाज न डोते. युनान्हे अभीरुल मुअमिनीन डजरते सय्यिहुना उस्माने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जब रात तहजजुद के लिये उठते तो वुजू का पानी पुद ले लेते थे. अर्ज की गई : आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ क्यूं महमत उठाते हैं भादिम को हुकम इरमा दिया करें. इरमाया : नहीं रात उन की है इस में आराम करते हैं.

(ابن عَسَاكِر ج ٣٩ ص ٢٣٦)

लकडियों का गह्वा उठाये यले आ रहे थे !

अभीरुल मुअमिनीन, डजरते सय्यिहुना उस्माने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अेक भौकअ पर अपने बाग में से लकडियों का गह्वा उठाये यले आ रहे थे डालांके कई गुलाम भी भौजूद थे. किसी ने अर्ज की : आप ने येह गह्वा अपने गुलाम से क्यूं न उठवा लिया ? इरमाया : उठवा तो सकता था लेकिन मैं अपने नइस को आजमा रहा हूं के वोह इस से आजिज तो नहीं या इसे ना पसन्द तो नहीं करता !

(الْمُع ١٧٧ ص)

मैं ने तेरा कान मरोडा था

डजरते सय्यिहुना उस्माने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने अेक गुलाम से इरमाया : मैं ने अेक मर्तबा तेरा कान मरोडा था इस लिये तू मुझ से उस का बदला ले ले.

(الرِّيَاضُ النَّصْرَةُ ج ٣ ص ٤٥)

करमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा ठिंक हो और वोह मुज पर दुर्रदे पाक न पड़े. (माम)

(वसाईले बफ़िश, स. 257)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

आभिरत की झिंक हिल में नूर पैदा करती है

हजरते सय्यिदुना उस्मान् एब्ने अफ़्फ़ान् عَنْهُ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ करमाते हें : हुन्या की झिंक हिल में अंधेरा जब के आभिरत की झिंक नूर पैदा करती है. (الْمُنْتَبَهَات ٤)

उस्माने गनी पर करम

भीठे भीठे एस्लामी भाईयो ! मक्के मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जामिउल कुरआन, हजरते सय्यिदुना उस्मान् एब्ने अफ़्फ़ान् عَنْهُ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर बेहद व बे एन्तिहा मेहरबान थे, एस ज़िम्न में अेक वाकिआ मुला-हज़ा करमाईये युनान्ये हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम عَنْهُ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ करमाते हें के जिन दिनोँ भागियोँ ने हजरते सय्यिदुना उस्मान् एब्ने अफ़्फ़ान् عَنْهُ रकीउश्शान का मुला-सरा किया हुवा था, उन के घर में पानी की अेक बूँद तक नहीँ जाने दी जा रही थी और हजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ प्यास की शिदत से तउपते रहते थे. मैं मुलाकात के लिये हाज़िर हुवा तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ उस दिन रोआदार थे. मुज को देष कर करमाया : अै अब्दुल्लाह बिन सलाम (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! मैं ने आज रात ताजदारे दो² जहान, रहमते आ-लमियान, मदीने के सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को एस रोशन-दान में देषा, सुल्ताने ज़माना, रसूले यगाना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने एन्तिहाई मुश्किकाना लहजे में एशाद करमाया : “अै उस्मान (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! एन लोगोँ ने पानी बन्द कर के तुम्हें प्यास से बे करार

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोज़े जुमुआा दो सो बार दुरद पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (क्रामال)

कर दिया है ?” मैं ने अर्ज़ की : ज़ो हां. तो झौरन ही आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने ओक डोल मेरी तरफ़ लटका दिया ज़ो पानी से भरा हुआ था, मैं उस से सैराब हुआ और अब इस वक्त भी उस पानी की ठन्डक अपनी दोनों छातियों और दोनों² कन्धों के दरमियान महसूस कर रहा हूँ. फिर हुआरे अकरम, नूरे मुजरसम, शाहे बनी आदम, शाफ़ेअे उमम, सरापा जूहो करम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने मुज से झरमाया : يا اَنْ شِئْتَ نُصِرْتَ عَلَيْهِمْ وَاِنْ شِئْتَ أَفْطَرْتُ عِندَنَا “अगर तुम्हारी प्वाडिश हो तो इन लोगों के मुकाबले में तुम्हारी धमदाह करूं और अगर तुम याहो तो हमारे पास आ कर रोज़ा धफ़तार करो.” मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ! आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ के दरबारे पुर अन्वार में हाज़िर हो कर रोज़ा धफ़तार करना मुझे ज़ियादा अजीज़ है. उज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ झरमाते हैं के मैं इस के बा'द रुप्तत हो कर यला आया और उसी रोज़ बागियों ने आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शहीद कर दिया.

(کتاب المناجات مع موسوعة الامام ابن ابی الدنيا ج ۳ ص ۷۴ رقم ۱۰۹)

उज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوٰی नकल करते हैं के उज़रते अल्लामा धब्ने बातीश رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْهِ (मु-तवफ़्फ़ा 655 छिजरी) इस से येही समजते हैं के (सरकार صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ के दीदार वाला) येह वाकिआ प्वाब में नहीं बल्के बेदारी की हालत में पेश आया.

(الحاوی للفتاوی للسیوطی ج ۲ ص ۳۱۰)

कई दिन तक रहे महसूर उन पर बन्द था पानी
शहादत उज़रते उस्मान की बेशक है वासानी
صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ مُحَمَّدٌ

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर्रद शरीफ़ पढो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा. (अिन सदी)

बे कसों का सहारा हमारा नबी

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा के सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर भ अतामे परवर दगार सख्खिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के तमाम डावात जाहिर व आशकार थे, साथ ही येह भी मा'लूम हुवा के हमारे मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बे कसों के मददगार भी हैं जभी तो इरमाया : **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن شِئْتُمْ نُصِرْتُمْ عَلَيْهِمْ** "अगर तुम्हारी ज्वाहिश हो तो इन लोगों के मुकाबले में तुम्हारी ईमदाद करूं."

गमजदों को रजा मुज़दा दीजे के हें

बे कसों का सहारा हमारा नबी

(हदाईके बज्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

भून रेजी ना मजूर

हजरते सख्खिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बे मिसाल सभ्रो तहम्मूल पर कुरबान ! जमे शहादत तो नोश इरमा लिया मगर मदीनतुल मुनव्वरह رَزَاهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में मुसल्मानों का भून बहाना पसन्द न इरमाया. आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मकाने आलीशान का मुहा-सरा हुवा और पानी बन्द कर दिया गया. जं निसारों ने दौलत-भाने पर हाजिर हो कर बल्वाइयों से मुकाबले की ईजाजत याही मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ईजाजत देने से ईन्कार इरमा दिया और जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के गुलाम हथियारों से लेस हो कर ईजाजत के लिये हाजिर हुअे तो इरमाया : अगर तुम लोग मेरी जुशनूदी याहते हो तो हथियार

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर कसरत से दुर्रुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर्रुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज्दिरत है. (भाषित)

भोल दो और सुनो ! तुम में से जो ली गुलाम हथियार भोल देगा मैं ने उस को आजाद किया. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम ! भून रेजी से पहले मेरा कत्ल हो जाना मुझे ज़ियादा मलबूब है व मुकाबला इस के, के मैं भून रेजी के बा'द कत्ल किया जाऊँ' या'नी मेरी शहादत लिख दी गई है और नबिय्ये गैबदान, रसूले जीशान, मलबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे इस की बिशारत दे दी है. उजरते सय्यिहुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने गुलामों से इरमाया : “अगर तुम ने जंग की फिर ली मेरी शहादत हो कर रहेगी.” (تحفة اثناعشرية ص ۳۲۷)

जो दिल को जिया दे जो मुकदर को जिला दे

वोह जल्वअे दीदार है उस्माने गनी का

ह-सनैने करीमैन ने पहरा दिया

मौलाअे काअेनात, मौला मुश्किल कुशा, शेरे फुदा, अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ उजरते सय्यिहुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَجْهَهُ الْكَرِيم से भेदद मलबूबत करते थे. हावात की नाजुकी देष कर आप ने अपने दोनों² शहादों ह-सनैने करीमैन या'नी इमामे हसन व हुसैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरमाया : “तुम दोनों² अपनी अपनी तलवारें ले कर उजरते उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरवाजे पर जाओ और पहरा दो.” कजाअे इलाही عَزَّوَجَلَّ जब गालिब आई उजरते सय्यिहुना उस्माने गनी रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शहादत हुई तो उजरते सय्यिहुना अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَجْهَهُ الْكَرِيم को सप्त सदमा हुवा और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने إِيَّاكَ اللهُ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ पढा.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर अक दुइद शरीक़ पढता है अद्लाह उंस के लिये अक कीरात अज़ लिभता है और कीरात उडुद पडाउ जितना है. (मुराज़)

पुढा ली और नबी ली पुढ अली ली उस से हें नाराज

अद्द उन का उढाअगा क्रियामत में परेशानी

(वसाँले बज्शिश, स. 497)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

गुस्ताफ़ बन्दर बन गया

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! सल्लाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बुग्गो अदावत रभना दारैन (या'नी दुन्या व आभिरत) में नुकसान व भुसरान का सबब है युनान्चे हजरते आरिफ़ बिद्लाह सय्यिदुना नूरुद्दीन अब्दुर्उमान ज़ामी فَدَسَ سِرُّهُ السَّامِي अपनी मशहूर किताब “शवाहिदुन्नुबुव्वत” में नकल करते हें 3 अफ़राह यमन के सफ़र पर निकले उन में अक कूफ़ी (या'नी कूफ़े का रहने वाला) था जो शैभैने करीमैन (हजरते सय्यिदुना अबू बक सिदीक़ और हजरते सय्यिदुना उमर (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) का गुस्ताफ़ था, उसे समजाया गया लेकिन वोह बाज़ न आया. जब येह तीनों यमन के करीब पछोंये तो अक जगह क्रियाम क्रिया और सो गअे. जब क्यू का वक्त आया तो उन में से उठ कर दौ२ ने पुज़ू क्रिया और फिर उस गुस्ताफ़ कूफ़ी को जगाया. वोह उठ कर कलने लगा : अफ़सोस ! मैं तुम से ईस मन्जिल में पीछे रह गया हूं, तुम ने मुजे अैन उस वक्त जगाया जब शहन्शाहे अ-जमो अरब, महबूबे रब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ मेरे सिरहाने तशरीक़ इरमा हो कर ईशाद इरमा रहे थे : “अै फ़ासिक़ ! अद्लाह उंस फ़ासिक़ को जलीलो प्वार करता है, ईसी सफ़र में तेरी शक़ल बदल जाअेगी.” जब वोह गुस्ताफ़ पुज़ू के लिये बैठा तो उस के पाउं की उंग्लियां मरुभ होना (या'नी बिगडना) शुइअ हो गई, फिर उस के दौनों२ पाउं बन्दर के पाउं के मुशाबेह हो

करमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (उं. ५)

गअे, फिर घुटनों तक बन्दर की तरल डो गया, यलं तक के उस का सारा बदन बन्दर की तरल बन गया. उस के रु-इका ने उस बन्दर नुमा गुस्ताभ को पकड कर डींट के पालान के साथ बांध दिया और अपनी मन्जिल की तरफ़ यल दिये. गुर्रुबे आइताब के वक्त वोड अेक अैसे जंगल में पलंये जलं कुछ बन्दर जम्न थे, जब ईस ने उन को देखा तो मुज़तरिब (या'नी बेताब) डो कर रस्सी छुडाई और उन में जा मिला. फिर सभी बन्दर इन डोनों के करीब आअे तो येड भाईइ (या'नी भौइजडा) डो गअे मगर उनडों ने इन को कोई अजियत न दी और वोड बन्दर नुमा गुस्ताभ इन डोनों के पास बैठ गया और इनडें देष देष कर आंसू बलाता रहा. अेक घन्टे के आ'द जब बन्दर वापस गअे तो वोड भी उन के साथ डी यला गया.

(شواهد النبوة، ص ۲۰۳)

डम उन की याद में धूमें मयाअेंगे कियामत तक

पडे डो जअें जल कर पाक सभ आ'दाअे उस्मानी

(वसाईले बप्शिश, स. 498)

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आप ने देखा ! शैभैने करीमैन

का गुस्ताभ बन्दर बन गया. किसी किसी को ईस तरल दुन्या में भी सजा दे कर लोगों के लिये ईब्रत का नुमूना बना दिया

जाता है ताके लोग डरें, गुनाडों और गुस्ताभियों से बाज आअें.

अदलाड तआला डम को सलाबअे किराम और अडले बैते ईजाम

سَلِّوْا عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

डम को अस्हाबे नबी से प्यार है

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

डम को अडले बैत से भी प्यार है

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तकी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमते भेजता है. (स्म)

ईमान पर जातिमा

उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ईबने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है के सरकारे वाला तभार, उम बे कसों के मददगार, शईओ रोजे शुमार, दो² आलम के मालिको मुप्तार, उबीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अक इितने का जिक किया और उजरते उस्मान के लिये इरमाया के येह उस में जुल्मन शहीद कर दिये जाअंगे.

(त्रुवुडी ज ०५ व ३९० हदिथ ३७२८)

मुइस्सिरे शहीर, उकीमुल उम्मत, उजरते मुइती अहमद यार ખान उदीसे पाक के तइत इरमाते हैं : एस ईशाद में यन्द गैबी भअरें हैं उजरते सय्यिदुना उस्माने गनी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) के ईन्तिकाल की तारीख, आप की वइत की जगह, आप की वइत की नौईय्यत, के शहीद हो कर डोगी आप का ईमान पर जातिमा कयूके शहादत के लिये ईस्लाम पर मौत उइरी है, येह है डुजुरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) का एल्मे गैब.

(मुलखस अज भिरआत, जि. 8, स. 403)

जिस आईने में नूरे ईलाही नजर आये

वोड आईना रुप्सार है उस्माने गनी का

(औके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जद निगाही का मा'लूम हो गया

उजरते अल्लामा ताजुद्दीन सुडकी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी किताब "तबकात" में लिखते हैं के अक शख्स ने सरे राह किसी औरत को गलत निगाहों से देखा इर जब वोड अभीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्तत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की पिढमते बा अ-उमत में हाजिर हुवा तो हजरते अभीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में इरमाया : तुम लोग अैसी डालत में मेरे सामने आते हो के तुम्हारी आंभों में जिना के अ-सरात होते हैं ! उस शप्स ने कहा के क्या रसूलुदलाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बा'द अब आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर वइय उतरने लगी है ? आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को येह कैसे मा'लूम हो गया के मेरी आंभों में जिना के अ-सरात हैं ? ईशाद इरमाया : “मुज़ पर वइय तो नाजिल नहीं होती लेकिन मैं ने जो कुछ कहा बिदकुल सखी बात है. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ. रब्बुल ईज़त एَزَّوَجَلَّ ने मुजे अैसी इरसत (नूरानी बसीरत) ईनायत इरमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के डालात व भयालात जान लेता हूँ.” (طَبَقَاتُ الشَّافِعِيَّةِ الْكُبْرَى لِلْسَّبْكِيِّ ج ٢ ص ٣٢٧ وغيره)

आंभों में पिघला हुवा सीसा

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अडले बसीरत और साडिबे बातिन थे लिहाजा आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी निगाडे करामत से उस शप्स की आंभों से की जाने वाली मा'सियत मुला-हजा इरमा ली और उस की आंभों को जिनाकार करार दिया. बेशक अज्जबिय्या या'नी ना मइरमा के जिस से शादी हमेशा के लिये हराम न हो उस की तरफ़ बिला ईजाजते शर-ई नज्जर करना बहुत बडी जुरअत है. मन्कूल है : “जो शप्स शइवत से किसी अज्जबिय्या के हुस्नो जमाल को देभेगा कियामत के दिन उस की आंभों में सीसा पिघला कर डाला जायेगा.” (٣٦٨ ص ٤ ج ٤)

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पाक न पढा तउकीक वोह बढ भुप्त हो गया. (उंन)

मुप्तलिङ्ग आ'म्रा का जिना

मक़्के मदीने के ताजदार, महुबूबे रब्बे ग़फ़ार وَسَلَّم وَاللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ँभ्रत निशान है : “आंभों का जिना देभना, कानों का जिना सुनना, जभान का जिना बोलना, हाथों का जिना पकडना और पाँउ का जिना ज्ञाना है.” ((२१०५).२) حَدِيثُ ١٤٢٨ (مُسْلِم) मुडकिंक अलल ँत्लाक, भातिमुल मुददिसीन, उजरते अद्लामा शैभ अबुदुल उक मुददिस देडलवी الْقَوِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَوِي ँस हदीसे पाक के तह्त इरमाने हैं : आंभों का जिना बढ निगाही, कानों का जिना हराम व झोइश भातों का सुनना, जभान का जिना हराम व बे हयाँ की गुइत-गू और पाँउ का जिना भुरे काम की तरङ्ग ज्ञाना है.

(اشعة اللمعات ج ١ ص ١٠٠)

आंभों में आग भर दी जायेगी

बढ निगाही से बयना बेहद ज़री है वरना भुदा की कसम ! अजाब बरदाशत नही हो सकेगा. मन्कूल है : “जो कोँ अपनी आंभों को नजरे हराम से पुर करेगा कियामत के रोज उस की आंभों में आग भर दी जायेगी.”

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ١٠)

आग की सलाह

इल्में इरामे देभने वालों, ना महरमों और अमरदों के साथ बढ निगाही करने वालों के लिये लम्हअे इकिया है, सुनो ! सुनो ! उजरते सय्यिदुना अद्लामा ँभने जौजी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नकल करते हैं : औरत के मडासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देभना ँवलीस के जहर में भुजे हुअे तीरों में से अेक तीर है, जिस ने ना महरम से आंभ की डिङ्गाजत न की उस की आंभ में बरोजे कियामत आग की सलाह इेरी जायेगी.

(بَحْرُ الْمُتَمُوعِ ص ١٧١)

ફરમાને મુસ્તકા عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના બૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા બૂલ ગયા. (ખરબી)

મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ બહારે શરીઅત જિલ્દ અવ્વલ સફહા 58 પર લિખા હૈ : “નબી સે જો બાત ખિલાફે આદત કબ્લે નુબુવ્વત ઝાહિર હો, ઉસ કો ઈરહાસ કહતે હૈં ઓર વલી સે જો ઐસી બાત સાદિર હો ઉસ કો કરામત કહતે હૈં ઓર આમ મુઅમિનીન સે જો સાદિર હો, ઉસે મઉનત કહતે હૈં ઓર બેબાક ફુજ્જાર યા ફુફુફાર સે જો ઉન કે મુવાફિક ઝાહિર હો, ઉસ કો ઈસ્તિદ્દરાજ કહતે હૈં ઓર ઉન કે ખિલાફ ઝાહિર હો તો ઈહાનત હે.”

ઉલૂએ શાન કા ક્યૂંકર બયાં હો એ મેરે પ્યારે

હયા કરતી હે તેરી તો શહા મખ્લુકે નૂરાની

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

અપને મદફૂન કી ખબર દે દી !

હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ માલિક عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَمِيك ફરમાતે હૈં કે અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના ઉસ્માને ગની رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ એક મર્તબા મદીનતુલ મુનવ્વરહ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا કે કબ્રિસ્તાન “જન્નતુલ બકીઅ” કે ઉસ હિસ્સે મેં તશરીફ લે ગએ જો “હશ્શે કૌકબ” કહલાતા થા, આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને વહાં એક જગહ પર ખડે હો કર ફરમાયા : “અન્કરીબ યહાં એક શપ્સ દફૂન કિયા જાએગા.” યુનાન્યે ઈસ કે થોડે હી અર્સે બા’દ આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કી શહાદત હો ગઈ ઓર બાગિયોં ને જનાઝએ મુબા-રકા કે સાથ ઈસ કદર ઊધમ બાઝી કી કે ન રૌઝએ મુનવ્વરહ કે કરીબ દફૂન કિયા જા સકા ન જન્નતુલ બકીઅ કે ઉસ હિસ્સે મેં મદફૂન કિયે જા સકે જો સહાબએ કિબાર (યા’ની બડે સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) કા કબ્રિસ્તાન થા બલકે સબ સે દૂર અલગ થલગ “હશ્શે કૌકબ” મેં આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સિપુર્દે ખાક કિયે ગએ જહાં કોઈ સોચ

करमाने मुस्तफ़ा: على الله تعالى غلبوا به وسلم. जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पाक न पढा तहकीक वोह बढ भप्त हो गया. (अबु)

भी नहीं सकता था क्यूंके उस वक्त तक वहां कोई कब्र ही न थी.

(الرياض النضرة، ج ٣ ص ٤١ وغيره، 96، س. करामाते सदाबा،)

अव्लाह से क्या प्यार है उस्माने गनी का

महबूबे फुदा यार है उस्माने गनी का

(जौके ना'त)

शहादत के बा'द गैबी आवाज

उजरते सय्यिदुना अदी बिन हातिम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है :
उजरते सय्यिदुना अभीरुल मुअमिनीन उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की
शहादत के दिन मैं ने अपने कानों से सुना के कोई बुलन्द आवाज से कह रहा है :

أَبَشْرُ ابْنِ عَفَّانٍ بِرُوحٍ وَرِيحَانٍ وَبِرَبِّ غَيْرِ غَضْبَانَ ط أَبَشْرُ ابْنِ عَفَّانٍ بِغُفْرَانَ وَرِضْوَانَ.
(या'नी उजरते उस्मान बिन अफ़्फ़ान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को राहत और पुशबू की
पुश भबरी हो और नाराज न होने वाले रब एَزَّ وَجَلَّ की मुलाकात की भबरे
फ़रहत आसार हो और फुदा एَزَّ وَجَلَّ के गुफ़रान व रिजवान (या'नी बफ़िश व
रिजा) की भी बिशारत हो) उजरते सय्यिदुना अदी बिन हातिम
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं के मैं इस आवाज को सुन कर धधर उधर नजर
दौडाने लगा और पीछे मुड कर भी देखा मगर मुझे कोई शप्स नजर
नहीं आया.

(ابن عساکر ج ٣٧ ص ٣٠٥، شواهد النبوة، ص ٢٠٩)

अव्लाहु गनी हद नहीं ई-आमो अता की

वोह ईज पे दरबार है उस्माने गनी का

(जौके ना'त)

मदफ़न में फ़िरिशतों का हुजूम

रिवायत है के आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का जनाजमे मुभा-रका यन्द
जं निसार रात की तारीकी में उठा कर जन्नतुल बकीअ पड़ोये, अभी

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَبِئْسَ مَا يَشْكُرُ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुबह और दस भरतबा शाम दुइडे पाक पढा
 (उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रातत भिलेगी. (कुरान)

कध्र शरीफ़ जोद रहे थे के अयानक सुवारों की अक बहुत बडी ता'दाद
 जन्नतुल बकीअ में दाखिल हुँ उन को देख कर येह हज़रात भौङ्गदा
 हो गये. सुवारों ने ब आवाजे बुलन्द कहा : आप हज़रात बिहकुल
 मत डरिये हम भी उन की तदफ़ीन में शिकत के लिये हाज़िर हुअे हैं.
 येह आवाज सुन कर लोगों का भौङ्ग दूर हो गया और इल्मीनान के
 साथ हज़रते सय्यिदुना उस्मान इब्ने अफ़्फ़ान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तदफ़ीन
 की गई. कख्रिस्तान से लौट कर उन सहाबियों (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ) ने कसम
 भा कर लोगों से कहा के यकीनन येह क़िरिशतों का गुरौह था.

(करामाते सहाबा, स. 99, 209 مُلْتَمَسًا شَوَاهِدُ النَّبُوءَةِ، ص)

रुक जाअें मेरे काम हसन हो नहीं सकता

इंजान मददगार है उस्माने गनी का

(जौके ना'त)

गुस्ताभ को दरिन्दे ने झुड डाला

मन्कूल है के हाजियों का अक काङ़िला मदीनतुल मुनव्वरह
 اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا हाज़िर हुवा. तमाम अहले काङ़िला हज़रते अमीरुल
 मुअमिनीन सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मज़ारे पुर
 अन्वार के दीदार के लिये गये लेकिन अक गुस्ताभ तौडीन व इलानत
 के तौर पर ज़ियारत के लिये नहीं गया और यूँ बहाना बनाया के
 मज़ार बहुत दूर है. काङ़िला जब अपने वतन को वापस आ रहा था
 तो रास्ते में अक भौङ्गनाक दरिन्दा गुराता हुवा उस गुस्ताभ पर उम्ला
 आवर हुवा और उस ने उसे थीर झुड कर टुकडे टुकडे कर डाला ! येह
 लरजा भैज मन्जर देख कर तमाम अहले काङ़िला ने ब-यक ज़बान
 कहा के येह हज़रते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की गुस्ताभी

करमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीक़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

का अन्जाम है.

(شواهد النبوة، ص २१०)

बीमार है जिस को नहीं आज़ारे मड़बबत

अस्थग है जो बीमार है उस्माने गनी का

(जौके ना'त)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! हज़रते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कितने बुलन्द पाया सहाबी हैं. यहाँ कोई येह न समझे के सिर्फ़ मज़ारे पुर अन्वार के दीदार के लिये न जाने की वजह से वोह शप्स उलाक हुआ, बल्के बात येह थी के वोह हज़रते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का गुस्ताभ था और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से टिल में दुश्मनी रખने की वजह से हाज़िर न हुआ था.

सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने म-दनी ओपरेशन इरमाया

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अल्लाह व रसूल

مُحَمَّدٌ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और सहाबअे किराम और अहले बैते ईजाम عَلَيْهِمُ الرّضْوَان की उल्फ़त व मड़बबत व प्यार के हुसूल के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के मड़के मड़के म-दनी माडोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हफ़तावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में पाबन्दी से शिर्कत कीजिये, रोजाना इिके मदीना करते हुअे म-दनी ईन्आमात का रिसाला पुर कर के अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाईये, नीज दुआओं की कबूलियत और सुन्नतों की तरबियत के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के हमराह हर माह कम अज कम तीन दिन के लिये सुन्नतों भरे सफ़र की सआदत हासिल कीजिये और न सिर्फ़ तन्हा बल्के दूसरे ईस्लामी भाईयों पर भी ईन्किरादी कोशिश कर के उन्हें भी म-दनी काइले के लिये

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर रोज़े जुमुआ हुज़ुर शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत कर्तूंगा. (क़ुरआन)

तय्यार कीजिये. आँधये ! म-दनी काङ्किले की अेक मडकी मडकी म-दनी बहार मुला-हजा इरमाँधये युनान्धे अेक आशिके रसूल का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेश करने की कोशिश करता हूँ : हमारा म-दनी काङ्किला “नाका पारदी” (बलोचिस्तान, पाकिस्तान) में सुन्नतों की तरबिख्यत के लिये लाज़िर हुवा था, म-दनी काङ्किले के अेक मुसाफ़िर के सर में यार छोटी छोटी गाँठें हो गई थीं जिन के सबब उन को आधा सीसी (या’नी आधे सर) का शदीद दर्द हुवा करता था, जब दर्द उठता तो दर्द की तरफ़ वाले येडरे का डिस्सा सियाह पड जाता और वोह तकलीफ़ के सबब ईस कदर तडपते के देखा न जाता. अेक रात ईसी तरह वोह दर्द से तडपने लगे हम ने गोदियां षिला कर उन को सुला दिया. सुबह उठे तो छशशाश बशशाश थे. उन्हों ने बताया के اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुज़ पर करम हो गया, मेरे प्वाब में सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मअ यार यार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ करम इरमाया. सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी जानिब ईशारा करते हुअे हज़रते सय्यिदुना अबू बक सिदीक عَنَّا اللهُ تَعَالَى سے इरमाया : “ईस का दर्द अत्म कर दो.” युनान्धे यारे गार व यारे मजार सय्यिदुना सिदीके अकबर عَنَّا اللهُ تَعَالَى ने मेरा ईस तरह म-दनी ऑपरेशन डिया के मेरा सर षोल दिया और मेरे दिमाग में से यार काले दाने निकाले और इरमाया : “बेटा ! अब तुम्हें कुछ नहीं होगा.” म-दनी बहार के रावी का कहना है : वाकेई वोह ईस्लामी ल्माई बिडकुल तन्दुरुस्त हो चुके थे. सफ़र से वापसी पर उन्हों ने दोबारा “येकअप” करवाया, डॉक्टर ने हैरान हो कर कहा : ल्माई क्माल है, तुम्हारे दिमाग के यारों दाने गाँध हो चुके हैं ! ईस पर उस ने रो रो कर म-दनी काङ्किले में सफ़र की

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ. (બુહારી)

બ-ર-કત ઔર ખ્વાબ કા તઝકિરા કિયા. ડોક્ટર બહુત મુ-તઅસ્સિર હુવા. ઉસ અસ્પતાલ કે ડોક્ટરોં સમેત વહાં મૌજૂદ 12 આફરાદ ને 12 દિન કે મ-દની કાફિલે મેં સફર કી નિચ્ચતેં લિખવાઈ ઔર બા'ઝ ડોક્ટર્ઝ ને અપને ચેહરે પર હાથોં હાથ સરવરે કાએનાત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી મહબ્બત કી નિશાની યા'ની દાઢી મુબારક સજાને કી નિચ્ચત કી.

હેં નબી કી નઝર, કાફિલે વાલોં પર આઓ સારે ચલેં, કાફિલે મેં ચલો
સીખને સુન્નતેં, કાફિલે મેં ચલો લૂટને રહમતેં, કાફિલે મેં ચલો

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

(ફેઝાને સુન્નત (જિલ્દ અવ્વલ), સ. 45 બ તગય્યુરે કલીલ)

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! બયાન કો ઈખ્તિતામ કી તરફ લાતે હુએ સુન્નત કી ફઝીલત ઔર ચન્દ સુન્નતેં ઔર આદાબ બયાન કરને કી સઆદત હાસિલ કરતા હૂં. તાજદારે રિસાલત, શહન્શાહે નુબુવ્વત, મુસ્તફા જાને રહમત, શમ્મે બઝમે હિદાયત, નોશઅે બઝમે જન્નત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને જન્નત નિશાન હૈ : જિસ ને મેરી સુન્નત સે મહબ્બત કી ઉસ ને મુઝ સે મહબ્બત કી ઔર જિસ ને મુઝ સે મહબ્બત કી વોહ જન્નત મેં મેરે સાથ હોગા. (ابن عساکر ج ٩ ص ٣٤٣)

સીના તેરી સુન્નત કા મદીના બને આકા

જન્નત મેં પડોસી મુઝે તુમ અપના બનાના

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

“હાથ મિલાના સુન્નત હૈ” કે ચૌદહ હુરુફ
કી નિસ્બત સે હાથ મિલાને કે 14 મ-દની ફૂલ

﴿1﴾ દો મુસલ્માનોં કા બ વક્તે મુલાકાત દોનોં હાથોં સે મુસા-ફહા કરના યા'ની દોનોં હાથ મિલાના સુન્નત હૈ ﴿2﴾ હાથ મિલાને

करमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पढोयता है. (طرائف)

से पहले सलाम कीजिये ﴿3﴾ रुक्सत होते वक्त भी सलाम कीजिये और (साथ में) हाथ भी मिला सकते हैं ﴿4﴾ नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का र्शशदि मुअज़्ज़म है : “जब दो मुसल्मान मुलाकात करते हुअे मुसा-इहा करते हैं और अेक दूसरे से ढेरिय्यत दरयाफ़त करते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान सो रलभतें नाज़िल इरमाता है जिन में से निनानवे रलभतें ज़ियादा पुर तपाक तरीके से मिलने वाले और अख्छे तरीके से अपने भाई से ढेरिय्यत दरयाफ़त करने वाले के लिये होती हैं.”¹ ﴿5﴾ हाथ मिलाने के दौरान दुर्रद शरीफ़ पढिये हाथ जुदा होने से पहले اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ अगले पिछले गुनाह बप्श दिये जाअेंगे ﴿6﴾ हाथ मिलाने वक्त दुर्रद शरीफ़ पढ कर हो सके तो येह दुआ भी पढ लीजिये : “يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ” (या’नी अल्लाह तआला हमारि और तुम्हारी मग्दिरत इरमाअे) ﴿7﴾ दो मुसल्मान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ मांगेंगे اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ कभूल होगी और हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग्दिरत हो जाअेगी اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ﴿8﴾ आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है ﴿9﴾ मुसल्मान को सलाम करने, हाथ मिलाने बल्के मलब्बत के साथ उस का दीदार करने से भी सवाब मिलता है. हदीसे पाक में है : जो कोई अपने मुसल्मान भाई की तरफ़ मलब्बत त्भरी नज़र से देखे और उस के दिल में अदावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बप्श दिये जाअेंगे² ﴿10﴾ जितनी बार मुलाकात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं ﴿11﴾ आज कल बा’ज लोग दोनों तरफ़ से अेक हाथ मिलाने बल्के सिर्फ़ उंग्लियां ही आपस में टकरा देते हैं येह सब ढिलाई सुन्नत है ﴿12﴾ हाथ मिलाने के बा’द फ़ुद अपना ही हाथ यूम लेना मकरुह है.³

1. اَلْفَتْحَةُ الْاَوْسَطُ ج ٥ ص ٣٨٠ حديث ٧٦٧٢ - 2. ايضاً ج ٦ ص ١٢١ حديث ٨٢٥١ -

3. बहारे शरीअत, जि. 3, स. 472

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस भरतभा दुरुद पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाज़िल करमाता है. (طرائف)

(छाथ मिलाने के बा'द अपना ही छाथ यूम लेने वाले ईस्लामी भाई अपनी आदत निकालें) हां अगर किसी बुज़ुर्ग से छाथ मिलाने के बा'द हुसूले ब-र-कत के लिये अपना छाथ यूम लिया तो कराहत नहीं, जैसा के आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : अगर किसी से मुसा-इहा किया फिर ब-र-कत के लिये अपना छाथ यूम लिया तो मुमा-न-अत की कोई वजह नहीं जब के जिस से छाथ मिलाने वोह उन हस्तियों में से हो जिन से ब-र-कत हासिल की जाती हो¹ ﴿13﴾ अगर अमरद (या'नी भूष सूरत लउके) से (या किसी बी मर्द से) छाथ मिलाने में शह्वत आती हो तो उस से छाथ मिलाना जाईज नहीं बल्के अगर देखने से शह्वत आती हो तो अब देखना भी गुनाह है² ﴿14﴾ मुसा-इहा करते (या'नी छाथ मिलाने) वक्त सुन्नत येह है के छाथ में रुमाल वगैरा हाईल न हो, दोनों हथेलियां धाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये.³

हज़ारों सुन्नतें सीपने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ हो कुतुब (1) 312 सइहात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 और (2) 120 सइहात की किताब “सुन्नतें और आदाब” हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबिय्यत का अेक बेहतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों तरा सइर भी है.

बूटने रलमतें काइले में यलो सीपने सुन्नतें काइले में यलो
होंगी हल मुश्किलें काइले में यलो अत्म हों शामतें काइले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

٤ جَدُّ الْمُنْتَارِ، كِتَابُ الْحَضْرَةِ وَالْإِبَاحَةِ، مَقُولُهُ ٤٥٥١، غَيْرِ مَطْبُوعِهِ - رَدُّ مَخْتَارِ ج ٢ ص ٩٨.

3. बहारे शरीअत, जि. 3, स. 471

करमाने मुस्तफा: صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिंक हो और वोड मुज पर दुइद शरीक न पढे तो वोड लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (त्रिब'रिब)

अेक युप सो सुभ ¹⁰⁰

गमे मदीना, अकीअ,
मङ्कित और बे
डिसाअ जन्तुल
किरदौस में आका
के पडोस का ताविल



11 जुमादल उभरा 1434 सि.दि.
22-04-2013

इंडरिस

उन्वान	अंक	उन्वान	अंक
दुइद शरीक की इजीवत	1	बे कसों का सडारा डमारा नबी	14
पुर असरार मा'जूर	2	भून रेजी ना मन्जूर	14
कुन्यत व अडकाअ	3	ड-सनेने करीमेन ने पडरा दिया	15
दो बार जन्त परीदी	4	गुस्ताअ बन्डर बन गया	16
950 अंत और 50 घोडे	5	ईमान पर पातिमा	18
अमूरे भैर के लिये अतिय्यात जम्अ करना सुन्त है	6	अद निगाडी का मा'लूम हो गया	18
उस्माने गनी का ईत्तिबाअे रसूल	8	आंभों में पिधला डुवा सीसा	19
गिआ में मिसाली सा-दगी	9	मुफ्तलिङ आ'अ का जिना	20
कभी सीधा डथ शर्मगाड को नहीं लगाया	9	आंभों में आग त्रर दी ज्ञअेगी	20
अन्ड कमरे में भी निराली शर्मो डया	9	आग की सलाई	20
डमेशा रोडे रपा करते	9	नजर डिल में शड्वत का बीज बोती है	21
पाडिम को अडमत नहीं देते	10	करामत की ता'रीक	21
लकडियों का गड्डा उडाअे यडे आ रहे थे !	10	अपने मडङन की अबर दे दी !	22
मैं ने तेरा कान मरोडा था	10	शडडत के आ'द गैबी आवाज	23
अब्रहेअ कर सय्यिदुना उस्माने गनी गिर्था व अरी करमाते	11	मडङन में किरिशतों का डुजूम	23
...तो मैं येड पसन्ड कइंगा के राअ हो जाओ	11	गुस्ताअ को दरिन्डे ने डड डाला	24
आभिरत की किंक डिल में नूर पैदा करती है	12	सिदीकेअकबर رضي الله تعالى عنه ने म-दनी ऑपरेशन करमाया	25
उस्माने गनी पर करम	12	डथ मिलाणे के 14 म-दनी डूल	27

کراماتے عثمانے گنی : صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم کی ناک پاک آبلوے کے پاس میرا لیک کر لو اور وہ لو
میں پر دھرتے پاک نہ پڑے۔ (حاکم)

مآخذ و مراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالمنجد دمشق	بحر الذموم	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآن مجید
پشاور	المنہیات	دار ابن حزم بیروت	مسلم
استنبول	شواہد النبوۃ	دار الفکر بیروت	ترغی
مرکز اہل سنت برکات رضا، اہمد	جامع کرامات الاولیاء	دار المعرفۃ بیروت	ابن ماجہ
مرکز اہل سنت برکات رضا، اہمد	حجة اللہ علی العالمین	دار الفکر بیروت	مسند امام احمد بن حنبل
دارالکتب العلمیۃ بیروت	نہایۃ الارب فی فنون الادب	دار الفکر بیروت	مصنف ابن ابی شیبہ
دار احیاء التراث العربی بیروت	الصدایۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	مجموعہ اوسط
دار المعرفۃ بیروت	درد مختار	دارالکتب العلمیۃ بیروت	حلیۃ الاولیاء
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الفرودس بہ آثار الخطاب
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	جد المتار	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الزیاض المنصرۃ
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دار الفکر بیروت	ابن عساکر
کوئٹہ	احیاء المعانی	المکتبۃ العصریۃ بیروت	کتاب السنات
فیضان القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مرآة	دار الفکر الحدید بیروت	الرحد
دہلی	تختہ اشعار شریعہ	دارالکتب الحدیث مصر	البلع
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	حدائق بخشش	دار صادر بیروت	احیاء العلوم
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	کرامات صحابہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	مکاشفۃ القلوب

یہ رسالہ پڑھ کر دوسرے کو دے دیجیے

شاہد گامی کی تکرری بات، عجزتہ ما آت، آ'راس اور جولو سے ملیا د
وگہرا میں مک-ت-ب-تول مہدینا کے شاہ آء کڈا رساٹل اور م-د-نی کڈلو
پر مشتمل پے کڈلے تکرسیم کر کے سوا ب کماٹھے، گاڈکو کو ب نیتھتے
سوا ب توڈکے میں دے نے کے لیتھے اپنی دکانوں پر ملی رساٹل رپنے کا ما'مبل
بناٹھے، اظہار فروشوں یا بکٹیوں کے جری آء اپنے مڈلے کے دہر دہر میں
مادانا کم اڈ کم آء اڈ سوننتوں لہرا رسالہ یا م-د-نی کڈلو کا
پے کڈلے پڈوٹا کر نے کی کی دا'وت کی ڈم میں مچاٹھے اور بھب سوا ب کماٹھے۔

બે રોઝગારી દૂર કરને કા અમલ

“ **يَا مُسَبِّبِ الْأَسْبَابِ** ” 500 બાર, અવ્વલ
વ આખિર દુરુદ શરીફ 11, 11 બાર, બા’દ
નમાઝે ઈશા કિબ્લા રૂ બા વુઝૂ નંગે સર ઐસી
જગહ પઢિયે કે સર ઔર આસ્માન કે દરમિયાન
કોઈ ચીઝ હાઈલ ન હો યહાં તક કે સર પર ટોપી
ભી ન હો. ઈસ્લામી બહનેં યેહ એહતિયાત
લાઝિમ કરેં કે કિસી અજનબી યા’ની ગૈર મહરમ
કી નઝર ન પડે.



મકતા-બતુલ મદીના

દા'વતે ઈસ્લામી

સિલ્વેસ્ટ્રેસ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામે, તીન દરવાઝા, અહમદાબાદ-1 ગુજરાત, ઈન્ડિયા
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net